Dr. Anshu Pandey
Assistant Professor
History department

UNIT – 5
CC- 5

LIBERALS
(महात्मा गांधी का राज्य संबंधी चिंतन : नैतिक दृष्टि)

महात्मा गांधी का राज्य संबंधी चिंतन आधुनिक राजनीतिक विचारों में एक अनूठा स्थान रखता है। गांधी का दृष्टिकोण पारंपरिक पश्चिमी उदारवाद से भिन्न था, क्योंकि वे राजनीति को केवल सत्ता और संस्थाओं का प्रश्न नहीं मानते थे, बल्कि उसे नैतिकता से गहराई से जोड़ते थे। गांधी के अनुसार राज्य मूलतः एक हिंसात्मक संस्था है, क्योंकि वह कानून के पालन के लिए बल प्रयोग करता है। इसी कारण वे राज्य को एक आवश्यक बुराई मानते थे।

गांधी का विश्वास था कि आदर्श समाज वह है जहाँ राज्य की आवश्यकता न्यूनतम हो। उन्होंने ऐसे समाज की कल्पना की जहाँ व्यक्ति नैतिक रूप से इतना जागरूक हो कि उसे बाहरी नियंत्रण की आवश्यकता न पड़े। गांधी का 'रामराज्य' इसी प्रकार की सामाजिक व्यवस्था का प्रतीक है। उनके लिए रामराज्य किसी धार्मिक शासन का नाम नहीं था, बल्कि एक ऐसी व्यवस्था का संकेत था जिसमें न्याय, सत्य और करुणा सर्वोपरि हों।

गांधी ने केंद्रीकृत राज्य सत्ता का विरोध किया और विकेंद्रीकरण पर बल दिया। उनका मानना था कि सत्ता का केंद्रीकरण व्यक्ति की स्वतंत्रता को नष्ट करता है

और शोषण को बढ़ावा देता है। इसीलिए उन्होंने ग्राम स्वराज की अवधारणा प्रस्तुत की, जिसमें गाँव को स्वशासित इकाई के रूप में देखा गया। उनके अनुसार सच्चा लोकतंत्र ऊपर से नहीं, बल्कि नीचे से विकसित होता है।

इस प्रकार गांधी का राज्य चिंतन केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि गहरे नैतिक और मानवीय मूल्यों पर आधारित था, जो आधुनिक उदारवाद को एक मानवीय आयाम प्रदान करता है।